National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 01-11-2021, Accepted: 16-11-2021, Published: 30-11-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 33-35

चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित बेदला ठिकाने का भौगोलिक वर्णन

नरेन्द्र सिंह राणावत
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
बेदला, पूर्व मेवाड़ राज्य के ठिकानों में एक प्रमुख उपनगरीय बस्ती है, जो उदयपुर से 6 किमी उत्तर में आहड़ नदी के किनारे स्थित है। यहाँ के राजपूत चौहान सरदारों को ''राव'' की पदवी प्राप्त है और वे पृथ्वीराज चौहान के वंशज हैं। उनके पूर्वज मेवाड़ के महाराणाओं की युद्धों में सेवा करते रहे, जिससे उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। बेदला की भू–संपदा चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों में फैली थी। चित्तौड़गढ़ जिले की बेदला भू–संपदा में 111 गाँव शामिल थे, जो विभिन्न परगनों में स्थित थे। इस क्षेत्र में तीन प्रमुख पहाड़ हैंः रामगढ़, काबरा, और बड़ा मगरा। रामगढ़ पहाड़ पर एक किला भी स्थित है, जिससे गंगरार को रामगढ़–गंगरार भी कहा जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात् जंगलों की कटाई के कारण ये पहाड़ वीरान हो गए। खेती–बाड़ी के लिए काली, पीली, और धामणी भूमि उपलब्ध थी, जिस पर विभिन्न फसलें उगाई जाती थीं। बेदला भू–संपदा में बेड़च नदी प्रमुख है, जो चित्तौड़गढ़ दुर्ग के पास बहती है और बनास नदी में मिलती है। यहाँ गंगरार और कुरज भू–भाग में कुछ उल्लेखनीय तालाब भी हैं, जिनमें गंगरार का तालाब और बख्त सागर प्रमुख हैं।

मूल शब्दः बेदला, मेवाड़, चित्तौड़गढ़, चौहान, भू–संपदा

पूर्वकालिक मेवाड़ राज्य की राजधानी रहे नगर उदयपुर से लगभग 6 किमी उत्तर–दिशा की तरफ आहड़ नाम की नदी के पश्चिमी किनारे पर एक उपनगरीय बस्ती स्थित है जो बेदला नाम से पहचानी जाती है। बेदला ठिकाने के राजपूत चौहान सरदार है और उन्हे "राव" की पदवी से सम्मानित किया गया है। बेदला ठिकाने के चौहान सरदार पृथ्वीराज चौहान के वंशज है तथा इनके पूर्वज युद्धों में मेवाड़ के महाराणाओं की सेवा में रहे, जिससे इन्हे विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

पूर्व कालिक मेवाड़–राज्य में बेदला के अतिरिक्त मेवाड़ राज्य के अभिजात्य तंत्र के अन्तर्गत अन्य ठिकाने भी थे, जिनकी श्रेणीवार संख्या 16, 32 और गोल थी। इन श्रेणियों के ठिकानेदारों में कई ऐसे थे जो बेदला के निकट–दूर के रक्त सम्बन्धी थे अथवा बेदला ठिकाने के छोटे भाइयों में से थे और उन्हें मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा अलग से स्वतंत्र रूप में जागीर अथवा भू–संपदा देकर उन्हे किसी निर्धारित श्रेणी में स्थान एवं पद प्रदान किया था।

बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित भू–सम्पति उदयपुर जिले के अतिरिक्त चित्तौडगढ़ जिले में भी स्थित थी। चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बेदला भू–संपदा सम्पति भी बेदला भू स्वामी को राव बलभ्रद सिंह चौहान (राव बल्लू) के समय में ही प्राप्त हुई थी। पं. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा ने अपनी पुस्तक उदयपुर राज्य का इतिहास,1 में लिखा है कि पूरबिया चौहान संग्राम सिंह का पौत्र राव बल्लू शाहजादे खूर्रम के साथ की महाराणा अमर सिंह (प्रथम) की लड़ाइयों में लड़ा। जहाँगीर बादशाह से सुलह हो जाने के पीछे जब सारे मेवाड़ पर उक्त महाराणा का अधिकार हो गया, उस समय उसकी आज्ञा से रावत मेघसिंह चूँडावत (सलूम्बर) ने नारायण दास शक्तावत को बेगूँ (चित्तौड़गढ जिला) से निकाल कर वहाँ पर महाराणा का अधिकार करवा दिया और महाराणा ने बेगूँ की जागीर (भू–संपदा) बल्लू चौहान को दे दी। इससे अप्रसन्न होकर मेघसिंह मुगल बादशाह के पास चला गया। परन्तु कुछ समय पीछे कुँवर कर्ण सिंह को भेजकर महाराणा ने मेघसिंह को उदयपुर पीछा बुला लीया और उसकी इच्छानुसार उसे बेगूँ की जागीर (भू–संपदा) दे दी। राव बल्लू (चौहान) को बेगूँ के बदले गंगराड़ का इलाका और बेदला मिला। बेदला पहले ही महाराणा उदयसिंह के काल में चौहान बल्लू को मिल चुका था।[2]

बेदला भू–संपदा जो चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित थी, उसमें एक सौ ग्यारह गाँव सम्मिलित थे। किन्तु ये सभी गाँव एक ही परगने में न होकर अलग–अलग परगने में स्थित थे; कुछ गंगरार परगने में तो कुछ चित्तौड़ दुर्ग की तलहटी के परगने, कुछ भदेसर परगने कुछ भरष परगने, कुछ कुरज परगने इत्यादी में स्थित थे।[3] इस वस्तु स्थिति में चित्तौडगढ़ जिले में स्थित बेदला भू–संपदा के भौगोलिक परिवेश को समेकित रूप में प्रस्तुत करना कठिन ही नहीं असंभव है। फिर भी बेदला भू–संपदा के अलग–अलग भू–भागों में उपलब्ध भौगोलिक विशिष्टताओं का उल्लेख करने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख पहाड़

बेदला भूसंपदा से सम्बन्धित गंगरार भू–सम्पति में तीन पहाड़ उल्लेखनीय हैं जिसमें से एक रामगढ़ का पहाड़ कहा जाता है। दूसरे एवं तीसरे का नाम क्रमशः 'काबरा एवं बड़ा मगरा' है।[4] ये तीनों पहाड़ काफी बडे हैं तथा उन पर घास, ईमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी वाले पेड़ो के साथ कई औषधीय पेड़ और वनस्पति पैदा होती थी। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् वर्तमान काल तक जंगलो की बेशुमार कटाई के कारण उल्लिखित पहाड़ वीरान से हो गये हैं। अब इन पर अधिकांशतः घास ही पैदा होती है, जिसके उपयोग की व्यवस्था राजस्थान सरकार का वन विभाग करता है। इन पहाड़ो में से 'रामगढ़' नामक पहाड़ पर एक पुराना किला बना हुआ है, जिसे 'रामगढ़' कहा जाता है, इसी कारण गंगरार को रामगढ़–गंगरार भी कहा जाता है। गंगरार भू क्षेत्र में स्थित पहाड़ो एवं गंगरार से पूर्व की तरफ कुरज परगने (वर्तमान राजसमन्द जिला) के कुँवार्या एवं मोही गाँव तक लगभग पूरा इलाका झाड़ियों से भरा था। इसी तरह चित्तौड़गढ़ स्थित बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित गाँव सोनियाणा से लेकर गाँव डेट की सीमा तक झाड़ियाँ फैली थीं। इनके बीच होकर सड़क निकलती थी। सड़क से होकर आने जाने वालों की सुरक्षा के लिए तथा इस भू–भाग में मानवीय बस्तियों के विकास की भावना से रियासत काल में स्थान–स्थान पर सुरक्षा चौकियाँ स्थापित की गई थीं तथा इस भू–भाग में चौहानों एवं अन्य राजपूत वर्ग के लोगों को जमीनें आवंटित की गई थीं।

मैदानी भाग

चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बेदला भू–संपदा के विभिन्न परगनों में काफी मात्रा में खेती–बाड़ी से सम्बन्धित काली, पीली, धामणी एवं अन्य किस्मों की मैदानी भूमि उपलब्ध थी, जिस पर सियालू एवं ऊनालू फसलों के तहत गेहूँ, जौ, चना, मक्की, उड़द, मूँग, चँवला, अफीम आदि उत्पन्न किये जाते थे। खेती बाड़ी से होने वाली उपज पर पूर्व वर्णित प्रक्रिया में ही उपज के हिसाब से आधा, तीसरा, चौथा हिस्सा महसूल या लगान के रूप में भूसंपदा स्वामी द्वारा वसूल किया जाता था। खेती की उपज बाँटने–बेचने का कोई निश्चित नियम नहीं था। जिस जमीन की उत्पादकता अधिक होती उससे अधिक एवं जिसका उपजाऊपन कम होता, उससे कम महसूल लिया जाता था।[5]

नदी, नालें एवं तालाब

बेदला–भूस्वामी की चित्तौड़गढ़ संबधी गंगरार भू–संपदा की सबसे प्रमुख नदी बेड़च है, जो उदयसागर (उदयुपर) के नाले से निकल कर बीच–बीच में पडने वाले छोटे–मोटे नालों का बरसाती पानी अपने में मिलाते हुए चित्तौड़गढ़ दुर्ग से लगभग 11–12 कि. मी. उत्तर में स्थित मोजा नगरी (ईसा पूर्व काल की 'मज्झमिका' नगरी) जो बेदला के पट्टे का था, के पश्चिमी भाग में बहती हुई, चौहानों के रियासत कालीन पट्टे के पारसोली भू–भाग में बहती हुई बनास नदी में जाकर मिलती है।

ऊपर उल्लिखित नदी के अलावा विशेष रूप से उल्लेख करने योग्य अन्य कोई नदी या नाला चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बेदला भू–संपदा में नहीं है। किन्तु बेदला भू–संपदा के गंगरार एवं कुरज भू–भाग में कतिपय उल्लेखनीय तालाब अवश्य हैं। इनमें गंगरार का तालाब प्रमुख है। यह तालाब रामगढ़ पहाड के पश्चिम की तरफ स्थित है। दूसरा तालाब इसी तालाब के बाँध से मिलता हुआ दक्षिण की तरफ है, जो पहले फूटा हुआ था। बेदला के राव बख्त सिंह चौहान ने 24,000/– रूपया लगाकर इस तालाब की मरम्मत करवाई और इसका नाम बख्त सागर रखा।6 अ इसके अलावा मोजा कुँवारिया, मोजा पाण्डोली, मोजा कोजूँन्दा एवं मोजा जूणदा में भी अच्छे तालाब हैं।[6]

वन संपदा

बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित गंगरार क्षेत्र में अधिकाशतः वे सभी पेड़–पौधें, वनस्पत्तियाँ आदि उपलब्ध होती थीं, जिनका उल्लेख उदयपुर जिले से सम्बन्धित वन सम्पदा के अन्तर्गत किया गया है। फिर भी चित्तौड़गढ़ क्षेत्र की भू–संपदा में खेर, खेजड़ा, खजूर, सीताफल एवं कँटीली झाड़ियाँ अधिक थीं। वर्तमान में वन सम्पदा नहीं के बराबर ही है।

पशु संपदा

बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित गंगरार भू–सम्पति क्षेत्र में पशु संपदा की दृष्टि से वे ही वन्य एवं पालतु पशु पाये जाते थे जिनका उल्लेख उदयपुर जिले के प्रसंग में किया गया है। फिर भी विशेष रूप से वन्य पशुओं में केहरी सिंह, चीते, बघेरे इत्यादि चित्तौड़ सम्बन्धी गंगरार क्षेत्र में तुलनात्मक दृष्टि से अधिक पाये जाते थे। इसका प्रमुख कारण शिकार की कमी एवं आबादी रहित वन्य क्षेत्र की अधिकता था।

खनिज संपदा

बेदला भूसंपदा की उदयपुर जिले से सम्बन्धित भू सम्पति में उल्लेखनीय खनिज संपदा नही थी। किन्तु चित्तौड़गढ जिले के गंगरार के निकट स्थित 'बडे मगरे में लोहे की तीन–चार खाने थीं, जिसमें से रियासत काल में लोहा निकाला जाता था।[7]

निवासी

बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित गंगरार क्षेत्र में बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण से सम्बन्धित विभिन्न जातियों के लोग एवं मुसलमान रहते थे। किन्तु अन्य जाति समुदायों की तुलना में जाट, ब्राह्मण एवं राजपुतों का जनसंख्या घनत्व अधिक था।[8] खेती बाड़ी करने वाले वर्ग में डाँगी, गुजर, धाकड़ इत्यादी भी गंगरार में उदयपुर क्षेत्र की तुलना में अधिक थे।[9]

प्रमुख स्थापत्य स्मारक

बेदला भू–संपदा की चित्तौड़गढ़ जिले सम्बन्धी भू–सम्पति में रामगढ़ नामक किला, ई. पू. की मज्झमिका नगरी के पुरातात्विक अवशेष तथा बेदला भूस्वामी राव बख्त सिंह द्वारा गंगरार बस्ती में बनवाये गये महल, पायगा तथा राव बख्त सिंह की झाली रानी द्वारा विक्रम संवत 1922 (सन् 1865) में महलों के नीचे बनवाया गया पुष्टि मार्ग से सम्बन्धित वैष्णव मन्दिर उल्लेखनीय हैं। इन स्मारकों में से रामगढ़ का किला पर्याप्त प्राचीन है, जो रियासत काल में ही टूट बिखर गया था, जिसकी मरम्मत वि. स. 1922 में राव बख्त सिंह ने करवाई थी तथा किले का नाम तख्त गढ़ रखा था।[10]

उपर्युक्त स्थापत्य स्मारकों के अलावा रामगढ़–गंगरार कस्बे में पुराने जमाने के दो शिखर बन्द नागर शैली के मन्दिर क्रमशः एक लक्ष्मीनाथ जी का एवं दूसरा जैन संप्रदाय से सम्बन्धित है। एक तीसरा मन्दिर रामगढ़ के किले के नीचे बड़े तालाब की पाल के निकट स्थित है, जिसे रघुनाथ जी का मन्दिर कहा जाता हैं। इन मन्दिरों के अलावा चित्तौड़गढ़ जिले के अन्य परगनों में स्थित बेदला भू–संपति में दूसरे कई मन्दिर ओर भी है किन्तु वे सामान्य हर मन्दिर श्रेणी के गोल गुम्बज वाले हैं, स्थापत्य की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय नहीं हैं।

बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित चित्तौड़गढ़ सम्बन्धी भू–क्षेत्र के सबसे महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय स्थापत्य स्मारक नगरी से सम्बन्धित हैं। नगरी, जो वर्तमान में एक छोटे गाँव की तरह आबाद है, वह प्राचीन काल में भारत के तीन प्रमुख नगरों में से एक था और वहाँ बौद्ध स्तूपों के साथ, हिन्दु मन्दिर, भवन इत्यादि बने हुए थे। प्राचीन काल में वह मज्झमिका के नाम से विख्यात था। भारतीय स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला के प्राचीन काल में मेवाड़ भू–भाग में विकास की दृष्टि से नगरी का विशिष्ट स्थान है, जिसकी विशद व्याख्या श्री रतन चन्द्र अग्रवाल[11] तथा राजशेखर व्यास (पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी) ने अपनी पुस्तक आर्कीटेक्चरल ग्लोरीज ऑफ मेवार[12] में प्रस्तुत की है। इन विद्वानों के उल्लेखों से प्रकट होता है कि ईसा पूर्व की चौथी तीसरी शताब्दी से ही चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बेदला भू–संपदा से सम्बन्धित नगरी का इलाका भारतीय धर्म, आध्यात्म, संस्कृति एवं कला का प्रमुख केन्द्र बन गया था।

नगरी के उपर्युक्त उल्लिखित स्मारकों के अलावा गंगरार बस्ती के बाहर बना सारणेश्वर महादेव का मन्दिर एवं गुरू गंगेवजी का मन्दिर भी गंगरार सम्बन्धी संपदा से सम्बन्ध रखने वाले प्रमुख स्थापत्य स्मारक हैं। ये दोनो शिखर बन्द नागर शैली के मन्दिर हैं। गुरू गंगेवजी के मन्दिर के आगे एक कुण्ड एवं एक सराय भी बनी हुई है। कुण्ड में बारह माह तक पानी रहता है, स्थानीय निवासी उसे नागदी कहते है, जिसका तात्पर्य महासतियाँ से लिया जाता है।[13]

स्वतंत्रता पूर्व काल के मेवाड़ राज्य के अधिराजपरक संगठन के अन्तर्गत 'अभिजात्य तंत्र से सम्बन्धित बेदला ठिकाने के ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि एवं भूगोल की दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि बेदला भू–संपदा एवं उसके स्वामी रहे पूरबिया चौहान रावों का मेवाड़ राज्य के शासन तंत्र एवं सैन्य तंत्र मे महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस भू–संपदा से सम्बन्धित उत्तरार्ध काल की अभिलेखीय सामग्री से स्पष्ट होता है कि राव बलभद्र सिंह (1540–1583 ई.),

जिसे बेदला एवं गंगरार की भू–सम्पतियाँ प्राप्त हुई थीं, के समय से लेकर सन् 1948 ई. तक जब मेवाड़ राज्य का भारतीय संघ में विलय हुआ तब तक[14] बेदला भू–संपदा स्वामियों की मेवाड़–राज्य की राजनीति, प्रशासन, धर्म नीति, सामाजिक जीवन तथा अन्य शक्तियों आदि से सम्बन्ध निर्धारण में निर्णायक भूमिका रही थी।

सन्दर्भ सूची

1. ओझाः उदयपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय खण्ड, प्रथम संस्करण, 1932, पृ. 875
2. नकसादर जवाब फहरिस्त तरतीब तवारीख मेवाड़, पट्टे बेदला, पृ. 4; मुहम्मद अलिमुद्दीनः जीयाऐ चौहान; पृ. 226
3. भाटी, हुकम सिंह (संपादक): मेवाड़ जागीदारों के गाँव पट्टो राहमरजादरी हकीकत; 1997; पृ. 55–62
4. अ मुहम्मद अलिमुद्दीनः जीयाऐ चौहान; पृ. 221
5. नकसादर जवाब फहरिस्त तरतीब तवारीख मेवाड़, पट्टे बेदला, पृ. 6
6. अ मुहम्मद अलिमुद्दीनः जीयाऐ चौहान; पृ. 222
7. ब नकसादर जवाब फहरिस्त तरतीब तवारीख मेवाड़, पट्टे बेदला, पृ. 1
8. नकसादर जवाब फहरिस्त तरतीब तवारीख मेवाड़, पट्टे बेदला, पृ. 4
9. अर्सकीन, के.डी.; मेवाड़ रेजिडेन्सी; (पुनर्मुद्रित 1992 ई. प्रथम प्रकाशन 1908 ई.) पृ. 93
10. वही, पृ. 93
11. मुहम्मद अलिमुद्दीनः जीयाऐ चौहान; पृ. 227
12. अग्रवाल श्री रतनचन्द्र, अर्ली स्कल्पचरल आर्ट ऑफ मेवाड़, मेवाड़ थ्रु द ऐजेज, पृ. 10–13
13. व्यास, राजशेखरः आर्कीटेक्चरल ग्लारीज ऑफ मेवाड़, 2004; पृ. 13–16
14. मज्झमिका, 2002, अं. 37, पृ. 9
15. बेदला–विगत उन्नीस, पत्र 161–203